**धारा 145, द. प्र. सं. के अधीन आवेदन पत्र**

न्यायालय उपखंड मजिस्ट्रेट / मजिस्ट्रेट .............................

मामला सं. ........................... सन् .............................

इनरी :

अबक ......................................................................................... प्रथम पक्षकार

बनाम

कखग .......................................................................................... द्वितीय पक्षकार

**धारा 145 द. प्र. सं. के अधीन आवेदनपत्र**

**अति सादर पूर्वक प्रदर्शित करता है –**

1. यह कि प्रथम पक्षकार का इस जिले के गाँव.............................. थाना ………………………..में स्थित एक भूखण्ड, एक एक फलों के बगीचा पर स्वामित्व है और उसका उन पर कब्जा है। यह राजस्व अभिलेख/नगरपालिका अभिलेख में प्रथम पक्षकार के भूखण्ड के रूप में अभिलिखित किया जाता है।
2. यह कि दूसरे पक्षकार का कथित फलों के बगीचे के भूखण्ड से कोई सरोकार नहीं है या उसका उसमें कोई हित या अधिकार नहीं है। लेकिन दूसरे पक्षकार के सदस्य बगीचे के आंशिक भाग पर विधि विरुद्ध प्रवेश द्वारा कथित आदेशित किये गये उत्पादो के पश्चात् कथित के शान्तिपूर्ण कब्जा एवम् उपभोग में प्रथम पक्षकार को अधिकार विहीन करने का प्रयास कर रहा है या उसको कष्ट पैदा करने पर तुला है।
3. यह कि दूसरे पक्षकार की मुद्रा तथा अवैधानिक एवम् अनधिकृत कार्यों से प्रथम पक्षकार के विधिक कब्जे तथा कथित फैलोधारी बगीचे के अधिभोग की बाबत शान्ति भंग हो जाने की संभावना है जिसको दसरे पक्षकार ने कभी भी कब्जाधारी होना नहीं देखा था।

**प्रार्थना**

यह अति सादर पूर्वक प्रार्थना की जाती है कि धारा 145, द. प्र. सं. के अधीन कार्यवाही इतर पक्षकार के विरुद्ध प्रारम्भ की जाए और दूसरे पक्षकार को प्रथम पक्षकार द्वारा कथित बगीचे के वस्तुतः कब्जा में लोई विघ्न पैदा करने से रोक दिया जाए।

प्रथम पक्षकार जरिये अधिवक्ता

तारीख -

स्थान -